

पंचमकाल में परमात्मा महावीर के शासन का सफल संचालन का महत्वपूर्ण कार्य पंचम गणधर श्री सुधर्मास्वामी की पाट-परम्परा बहुत ही जवाबदारी से कर रही है। 2671 वर्ष में अनेक प्रभावशाली आचार्य हो गए, जिन्होंने जिनशासन की अद्भुत प्रभावना की। उसने एक नाम है - विश्ववन्दनीय गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा।

जिनका जन्म वि.सं.१८८३ में पोष सुदि ७ के शुभ दिन भरतपुर नगर में श्रेष्ठीवर्य श्रीऋषभदास पारख के घर, धर्मपत्नि केशरबाई की कुशी से हुआ, जिसका रत्नराज नामकरण किया गया। बचपन से ही सुंदर संस्कारों का सिंचन होता रहा। शुभ संयोग से भरतपुर में प.पू. जैनाचार्य श्रीमद्विजय प्रमोदसूरीश्वरजी म.सा का शुभागमन मानो रत्नराज के लिए ही हुआ हो। उनकी वैराग्यमय प्रवचनधारा ने रत्नराज के हृदय में संसार के प्रति उदासीन भाव की ज्योति प्रचलित की। माता-पिता के स्वर्णवास पश्चात् पितातुल्य बड़े भ्राता माणकचंदजी से आज़ा लेकर रत्नराज वि.सं.१९०४ वैशाख सुदि ५ के दिन उदयपुर में प्रवज्या लेकर मुनि रत्नविजय बने। दीक्षा लेकर संयम साधना, गुरु सेवा एवं ज्ञानार्जन में लीन बन गए। अन्य समुदायों से आत्मीय संबंध होने से अध्ययन हेतु खतरगचरीय सागरचंदजी के पास भी रहे। न्याय, व्याकरण एवं आगमों का अति गहन अध्ययन किया। उस समय में यति जीवन में बढ़ी शिथिलता को देख उनका मानस व्यथित हुआ एवं शुद्ध साधवाचार के प्रति अभिमुख हुआ। परिणाम स्वरूप क्रियोद्धार के लिए संकल्पित हुए। वि.सं.१९२४ आहोरे (राज.) में सकल श्रीसंघ की उपस्थिति में, आचार्य श्रीमद्विजय प्रमोदसूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों से “आचार्यपद” प्रदान कर श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. नाम उद्घोषित हुआ। वि.सं.१९२५ में आषाढ़ वदि १० के दिन जावरा (म.प्र.) नगर में क्रियोद्धार कर शिथिलाचार को मूल से त्याग कर शुद्ध साधवाचार को अंगीकार किया।

साहित्य साधना की यात्रा में आपका विशिष्ट सृजन रहा अभिधान राजेन्द्र कोष! 15 वर्षों के अखंड परिश्रम की यह अनुपम देन थी, जिसका उपयोग अनेक ग्रंथों के संशोधन,

## प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.



संपादन में निष्पक्षता से हो रहा है। इस कोष की रचना ने ही पूज्य को विश्वपूज्य के नाम से प्रसिद्ध किया। यह कोष वर्तमान में राष्ट्रपति भवन में भी स्थापित है। इसके अतिरिक्त कल्पसूत्र प्रबोधिका, बालावबोध आदि अनेक संस्कृत-प्राकृत ग्रंथों की रचना की गई, अनेक चैत्यवन्दन, स्तुति एवं स्तवनों की भी रचना हुई। आपने ३ बार श्री संघ के समक्ष 45 आगम आधारित वाचना प्रदान की। पूज्य गुरुदेवश्री ने केवल क्रियोद्धार ही नहीं किया बल्कि जिनशासन को “श्री अभिधान राजेन्द्रकोष” प्रदान कर ज्ञानोद्धार भी किया।

तीर्थोद्धार के कार्यों में स्वर्णगिरि तीर्थ जालोर, केसरियाजी तीर्थ, तालनपुर तीर्थ, मोहनखेड़ा तीर्थ, भांडवपुर तीर्थ आदि मुख्य हैं, जिनका जीर्णोद्धार आपकी प्रेरणा से हुआ। साथ ही अनेक गाँव-नगरों में अंजनशलाका प्रतिष्ठा करवाई, जिसमें आहोरे में सर्वाधिक 900 बिंबों की अंजनशलाका करवाई।

शासन प्रभावना का इतिहास भी अजोड़ है। शत्रुंजय, गिरनार, मक्षी, केशरियाजी आदि तीर्थों के छःरी पालित संघ, ज्ञानभंडारों की स्थापना, अनेक मुमुक्षुओं को दीक्षा प्रदान, कई अपूजकों को मूर्तिपूजक बनाया, आदि अनेक कार्य किए।

तप और जप भी आपके जीवन की मुख्य साधना रही, जिसमें मांगीतुंगी पहाड़ एवं चामुंड वन में 8 अद्वाइ + 8 पारणा, 72 दिवसीय साधना, तेले-बेले की तपस्या, अरिहंतपद का सवाकरोड़ जाप, कुक्षि श्रीसंघ को अग्निप्रकोप से सावधान किया।

वर्तमान में सर्वाधिक गुरु मंदिर (300 से अधिक) आपके ही हैं, अभी लंदन में भी प्रतिष्ठा संपन्न हुई, श्री शत्रुंजय महातीर्थ में भी बाबु देरासर में आपकी प्रतिमा स्थापित है। आपके सर्वाधिक गुरुमंदिरों की प्रतिष्ठा पुण्यसम्राट गुरुदेवश्री के करकमलों द्वारा हुई है।

वि.सं.१९६३, पोष सुदि ६ की रात्रि में राजगढ़ में आपका देवलोकगमन हुआ। पोष सुदि ७ को मोहनखेड़ा में अग्निसंस्कार हुआ। मोहनखेड़ा तीर्थ में निरंतर गुरुभक्तों को आवागमन चलता रहता है।